डॉ0 योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' के दोहों में 'पर्यावरण–संरक्षण' की चिन्ता

सचिन प्रधान
आनन्द स्वरुप आर्य सरस्वती विद्या मन्दिर
दिल्ली रोड, रुड़की

मानव ने एक ओर तो आशातीत वैज्ञानिक उपलब्धियों को प्राप्त कर स्वयं को गौरवान्वित किया है तो दूसरी ओर उसने प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर स्वयं को प्रकृति का कोपभाजन बनाया है। तकनीकी उपलब्धि के साथ–साथ प्रदूषण की समस्या ने भी विकराल रुप धारण कर लिया है। जिस प्रकार सुरसा का मुख हनुमान जी को निगल जाने के लिए बढ़ता चला गया था, उसी प्रकार प्रदूषण भयंकर रुप धारण करता जा रहा है। वस्तुतः वायु, जल, मिट्टी, पौधे और पशुजगत् सभी मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। जब मानव अपने विकास की धुन में इनका सीमा से अधिक दोहन करता है तो प्रकृति के ये घटक प्रदूषित हो जाते हैं और प्रकृति का स्वाभाविक संतुलन बिगड जाता है। गंगा, यमुना और क्षिप्रा जैसी पवित्र नदियों का जल अनेक स्थलों पर आज पीने योग्य भी नहीं रहा है।

पर्यावरण–संरक्षण आज पूरे विश्व के लिए चिन्ता का विषय बन चुका है। निरन्तर हो रहे आश्यर्चजनक ऋतु परिवर्तन के साथ–साथ विश्व में बढ़ रही नई–नई बीमारियों, बाढ़ की विभीषिका, भूकम्प, सुनामी जैसी विनाशकारी आपदाओं की वृद्धि ने विश्व–मानव के अस्तित्व को चुनौती दे दी है। भूजल के गिरते स्तर के साथ ही बड़ी–बड़ी नदियों के प्रदूषित होने से उत्पन्न जल–संकट ने सभी को चिंतित कर दिया है। अन्न की पैदावार में कमी और जनसंख्या में हो रही बेतहाशा वृद्धि के कारण मानव–जीवन दूभर होता जा रहा है।

पर्यावरण संरक्षण का सीधा–सा अर्थ है, अपने ही जीवन की रक्षा करना अर्थात् हम अपने चारों ओर के पर्यावरण को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करें और उसके घेरे को अभेद्य बनाए रखकर अपने जीवन के अनुकूल बनाए रखें। विज्ञान साक्षी है कि पर्यावरण और मानव–जीवन परस्पर एक–दूसरे पर आश्रित हैं। अतः पर्यावरण–संरक्षण का तात्पर्य है अपने ही जीवन की रक्षा।

आज पूरे विश्व में 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण प्रकृति के असंतुलन से उत्पन्न विभीषिका से मानव के अस्तित्व को उत्पन्न खतरों को देख–देखकर वैज्ञानिक और राजनेता समान रुप से चिंतित हैं। पृथ्वी पर बढ़ता 'इलैक्ट्रानिक कचरा' यानि 'ई–वेस्ट' और अंतरिक्ष में बढ़ते तापमान से उत्पन्न खतरों के साथ ही 'जल–स्रोतों' के सूखने से बढ़ते संकट को देखकर सारा विश्व भयभीत है।

ऐसे में 'पर्यावरण–संरक्षण' की आवश्यकता के साथ–साथ समाज को निरन्तर बढ़ते 'पर्यावरण–प्रदूषण' के भयावह संकट का ज्ञान कराना बहुत आवश्यक हो गया है।

वास्तविकता यह है कि पर्यावरण–संरक्षण तो हमारे नित्य प्रति के क्रियाकलापों से ही जुड़ा रहा है। भारत में यह विशेषता देखी जा सकती है। वेदों से लेकर बाल्मिकी, महर्षि व्यास, महाकवि कालीदास, जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानन्दन पन्त आदि कवियों के काव्य में प्रकृति एवं पर्यावरण का विशद् वर्णन हम देखते हैं।

पर्यावरण–प्रदूषण ने आज विश्व भर में नए–नए खतरों की घंटी बजाकर आदमी की नींद उडा दी है। मानसिक स्तर पर भी बड़ी तेजी से आदमी तथा अन्य प्राणियों का स्वभाव विकारग्रस्त होता जा रहा है, जिसका दुष्परिणाम असहिष्णुता, असंतोष, धैर्यहीनता के रुप में हम देख रहे हैं।

क्रोध, हिंसा, ईर्ष्या और स्वार्थ की अभिवृद्धि के कारण समाज में निरन्तर घुटन, अलगाव और अपराध बढ़ रहे हैं। आदमी जैसे 'मर–मरकर' जीने को मजबूर हो गया है। हम और आप पल–पल घुट रहे हैं, लेकिन 'पर्यावरण' की चिन्ता शायद हमें अभी भी नहीं है।

पर्यावरण बचाने की यह लड़ाई वास्तव में हम सबकी साझा लड़ाई है और सच मानें, तो हम सभी के अस्तित्व की रक्षा की अत्यन्त महत्वपूर्ण लड़ाई है।

साहित्यकार का भी यह धर्म बनता है कि पर्यावरण–संरक्षण के लिए एक ओर जहाँ सरकारें तथा वैज्ञानिक अपने–अपने दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर जनजागरण का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य साहित्यकार ही कर सकता है। अनेक साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जोरदार ढंग से पर्यावरण–संरक्षण की अलख जगाई है। गीतों, ग़ज़लों, दोहों, कहानियों, लघुकथाओं, निबन्धों आदि के माध्यम से पाठकों को पर्यावरण–संरक्षण के लिए न केवल प्रेरित किया है अपितु पर्यावरण–प्रदूषण से होने वाले दुष्परिणामों एवं संकट से आगाह भी किया है।

राष्ट्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सदस्य रहे ख्यातिनाम साहित्यकार डॉ0 योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' ने अपने दोहों, ग़ज़लों और कहानियों के माध्यम से पर्यावरण–संरक्षण की लड़ाई को 'कलम' के हथियार से लड़ने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। लगभग तीन दर्जन पुस्तकों के रचयिता डॉ0 'अरुण' ने अपने दो ग्रन्थों **'जीवन–अमृत : पर्यावरण–चेतना'** और **'अक्षर अक्षर हो अमर'** में सरल, सहज और सुबोध भाषा–शैली में 'पर्यावरण–चेतना' से जुड़े प्रायः हर विषय पर दोहे रचे हैं। 'पर्यावरण–संरक्षण' के इस पुनीत यज्ञ में आगे बढ़कर पूरे समाज को राह दिखाते हुए वे कहते हैं–

राह दिखाए विश्व को, फिर से हिन्दुस्तान।
शुद्ध रहे पर्यावरण, बचे विश्व की जान।।

इसी प्रकार डॉ0 'अरुण' द्वारा रचा गया यह दोहा हम सभी को आने वाले कल की भयानक तस्वीर दिखाने में सफल है और हमारी आँखें खोलता है–

यदि न बचा पर्यावरण, होगा बेड़ा गर्क।
बढ़ा प्रदूषण तो समझ, धरती होगी नर्क।।

मानव को पर्यावरण–संरक्षण के प्रति प्रेरित करते हुए यह दोहा देखिये–

नदियाँ दूषित हो गई, अंबर उगले आग।
पर्यावरण सुधार ले, जाग मनुज अब जाग।।

पॉलिथीन, थर्माकोल के बढ़ते प्रयोग से वातावरण तेजी से प्रदूषित होता जा रहा है। इसका कचरा नष्ट नहीं होता है और जलाने पर धुएँ में खतरनाक गैसे उत्पन्न होती हैं। पॉलिथीन को पर्यावरण के शत्रु की संज्ञा देते हुए डॉ0 'अरुण' कहते हैं–

पॉलिथीन को मानिए, दुश्मन नंबर एक।
पर्यावरण बचाइए, इसे दीजिए फेंक।।

प्रकृति ममतामयी माँ की तरह युगों से हमारी रक्षा करती आई है, लेकिन आज हम प्रकृति की पूरी तरह घोर उपेक्षा करके कैसे भी सुख प्राप्त करने की अंधी दौड़ में लगातार दौड़ रहे हैं। प्रकृति–चेतना से सम्बन्धित डॉ0 'अरुण' के सुन्दर दोहे देखिए–

मिला सभी कुछ प्रकृति से, धरती–जल–आकाश।
दुरुपयोग करता मनुज, होता तभी विनाश।।

प्रकृति पालती जगत को, यह जाने संसार।
फिर भी पापी बन मनुज, करे प्रकृति पर वार।।

वृक्ष दनादन काटकर, जंगल करता साफ़।
कहो, प्रकृति कैसे करे, इस मानव को माफ़।।

रखनी होगी प्रकृति की, हमको स्वयं संभाल।
बढ़ा प्रदूषण अब अगर, होगा जग बेहाल।।

रक्षक बन पर्वत खड़े, सागर दे बरसात।
हरे–भरे जंगल सभी, कुदरत की सौगात।।

रोको दोहन प्रकृति का, हुई नहीं है देर।
नींद जहाँ टूटे मनुज, होती वहीं सबेर।।

वनों की अंधाधुंध कटाई ने पर्यावरण का सन्तुलन बिगाड़ दिया है। जो वृक्ष हमारे लिए जीवन पालक हैं, हम उन्हें ही समाप्त करने पर तुले हैं। वृक्ष–महत्ता के सन्दर्भ में डॉ0 'अरुण' के ये दोहे कितने सटीक बन पड़े हैं–

वृक्ष अगर कटते रहे, नष्ट मान संसार।
जल्दी वह दिन आएगा, बरसेंगे अंगार।।

वन की संस्कृति ही रही, भारत की पहचान।
हुआ राम वनवास तो, राम बने भगवान।।

वृक्ष जगत् के मित्र हैं, सबको दे आराम।
सबकी रक्षा ये करें, आते सबके काम।।

वृक्ष युगों से हैं रहे, मानवता के मीत।
जग ने पाए फूल–फल, गाए इनके गीत।।

वृक्षारोपण कीजिए, कायम रहे बहार।
हरियाली इस जगत में, जीवन का आधार।।

वृक्ष लगाना धर्म हो, होगा तब कल्याण।
वृक्षारोपण कर मनुज, तभी बचेंगे प्राण।।

आज के बढ़ते पर्यावरण–प्रदूषण ने निःसंदेह पूरे विश्व के समक्ष अस्तित्व की चुनौती प्रस्तुत कर दी है। वायु और ध्वनि प्रदूषण के साथ–साथ जल–प्रदूषण वास्तव में विनाशकारी दैत्य बनकर हमारे जीवन को लील जाने के लिए तत्पर है। डॉ0 'अरुण' अपने दोहों में जल चेतना के सन्दर्भों को बहुत ही सशक्त रुप में अभिव्यक्ति देते हैं–

जल से ही सब तीर्थ हैं, जल से ही भगवान।
जल के कारण प्राण हैं, जल बिन सब बेजान।।

जल ही प्राणाधार है, जल से ही संसार।
जल–संरक्षण सब करें, जल जीवन का सार।।

जल बिन जीवन है नहीं, कहते हैं सब लोग।
जल बिन जग जल जाएगा, हावी होंगे रोग।।

गंगा पर भी पड़ गई, प्रदूषणों की मार।
करती थी उद्धार जो, खुद चाहे उद्धार।।

वर्षा–जल संचित करें, संवरेगें बहु काम।
जल की रक्षा यदि करें, पायेंगे आराम।।

भूजल से मिटती रही, युगों–युगों से प्यास।
दूषित यदि जल को किया, होगा सत्यानाश।।

आज के इस भौतिकवादी युग में व्यक्ति अपना जीवन भौतिक सुख–सुविधाओं और ऐशोआराम के साथ बिताना चाहता है। व्यक्ति की इस आधुनिक संवेदना ने महानगरीय जीवन और सभ्यता को पोषक तत्व प्रदान किए हैं। गाँव से लोग शहर की ओर दौड़ रहे हैं। गाँव कस्बों में, कस्बे नगरों में और नगर महानगरों के रुप में परिवर्तित होते जा रहे हैं। औद्योगिक नगरों की व्यस्तता, भौतिक आकर्षण, विषाक्त वातावरण, भीड़–भाड़ के बीच अपनी पहचान खोते हुए आदमी का चित्रण कितने सहज एवं स्वाभाविक ढंग से कवि ने अपने दोहों में किया है–

कंकरीट के वन बने, रहते जिनमें लोग।
संस्कृति को बिसरा दिया, याद रहे बस भोग।।

नगर बने जंगल सभी, बसते हैं हैवान।
सब–कुछ भी मिल जाए यदि, है अलभ्य इंसान।।

गाँवों को नित खा रही, अब नगरों की बाढ़।
हुए खोखले आज तो, रिश्ते सभी प्रगाढ़।।

बाह्य प्रदूषण कम बुरा, लड़ सकते हैं आप।
बुरा प्रदूषण ह्रदय का, देता नित संताप।।

साफ हवा मिलती नहीं, सीलन भरे मकान।
नगरों में अब घुट रहा, बेचारा इंसान।।

आना होगा मनुज को, कुदरत के ही पास।
कंकरीट के ये महल, नहीं आ रहे रास।।

यह विकास कैसा भला, इसमें छिपा विनाश।
दूषित यह पर्यावरण, करता सतत् निराश।।

प्राकृतिक जीवन से कटकर और औद्योगिक नगरों की भीड़ में गुम होकर आदमी कितना सीमित, कितना बौना और कितना अधूरा हो गया है। असंख्य वाहनों और कारखानों से निकला धुआँ, प्रदूषित जल और बढ़ता शोर आदमी के जीवन में ज़हर घोल रहा है। ध्वनि–प्रदूषण से उत्पन्न हुई समस्याओं की ओर इशारा करते हुए डॉ0 'अरुण' के ये दोहे महानगरीय जीवन की विसंगतियों का स्पष्ट चित्रण है–

कभी मौन की साधना, करते थे सब लोग।
अब तो देखों शोर ही, बना शहर का रोग।।

बहरे अब होने लगे, शहरों में इंसान।
शोर बढ़ा तो फट रहे, अब लोगों के कान।।

इसी भाँति बढ़ता गया, अगर शोर दिन–रात।
बहरे सब हो जाएँगे, कौन सुनेगा बात।।

हृदय रोग बढ़ जाएँगे, अगर बढ़ेगा शोर।
संकट में होगा मनुज, कहाँ मिलेगा ठौर?

शोर–शराबा कर रहा, अब जग को हैरान।
चिंतन कैसे हो भला, चिंता में जब जान।।

'पृथ्वी सूक्त' के अनुसार वन और वृक्ष ही वर्षा लाते हैं, मिट्टी के कटान को रोकते हैं, बाढ़ और सूखे को रोकते हैं तथा सबसे बढ़कर वातावरण में उपस्थित दूषित गैसों को खींचते रहते हैं। वनस्पति विज्ञान साक्षी है कि ढ़ाक, पलाश, दूर्वा एवं कुशा आदि की महत्ता पर्यावरण–शुद्धि में सहायक है, इसी कारण इन्हें 'नवग्रह पूजन' जैसे धार्मिक कृत्यों से जोड़ा गया है। पीपल, नीम, अशोक, तुलसी आदि वृक्षों में दूषित धुएँ और धूल के साथ विषैली गैसों को अवशोषित करने की असीमित शक्ति विज्ञान द्वारा प्रमाणित हो चुकी है।

इस संदर्भ में डॉ0 'अरुण' के ये दोहे देखिए–

पीपल को नित पूजिए, पीपल वृक्ष महान।
शुद्ध वायु दे रात–दिन, करे जगत–कल्याण।।

नीम रोगहारी सदा, देवदार मजबूत।
जीवन का आधार ये, वृक्ष धरा के पूत।।

पूजें लोग अशोक को, वट पीपल के साथ।
जिसे मिलें बस तीन ये, रहता नहीं अनाथ।।

वृक्ष बुरांस सुंदर बहुत, महिमा रही अपार।
हृदय रोग से मुक्ति दे, करे प्रकृति–श्रृंगार।।

शीशम, साल, बबूल हैं, वृक्षों के सिरताज।
इनमें गुण अनमोल हैं, जाने सकल समाज।।

डॉ0 योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' ने समाज में पर्यावरण–संरक्षण के प्रति जागृति लाने के लिए बहुत रोचक और सरल भाषा शैली में लोकप्रिय छन्द दोहे में इक्कीसवीं शताब्दी में दुनिया की सबसे बड़ी चिन्ता 'पर्यावरण–प्रदूषण' के कारण निरन्तर बढ़ रहे विनाश और मानवता के सामने खड़े खतरों को बहुत सुन्दर ढंग से उजागर किया है। डॉ0 'अरुण' जी द्वारा रचे इन दोहों में आने वाले कल के कल्याण की उनकी बलवती इच्छा दिखाई दी है। दोहों के माध्यम से पूरे समाज को

पर्यावरण–प्रदूषण की विभिन्न स्थितियों से उत्पन्न खतरों का परिचय सहज और सरल भाषा में कराना अपने–आप में बहुत कठिन और बड़ा महत्त्वपूर्ण काम है, जिसे अपने व्यापक अनुभवों और रचना–शक्ति के बल पर डॉ0 'अरुण' ने कर दिखाया है। वास्तव में इन दोहों को हमें अपने भविष्य की नींव, बच्चों तक अवश्य पहुँचाना चाहिए। आप भी इन दोहों के संदेश को देखिए, जिनमें आदमी की नासमझी पर कटाक्ष करते हुए डॉ0 'अरुण' जी ने सटीक अभिव्यक्ति दी है–

वृक्ष जा रहा काटता, मनुज लालची आज।
कल को ये हो जाएगा, पानी को मुहताज।।

सचमुच, जो सच्चाई लंबे–लंबे भाषणों से समझानी कठिन है, उसे इस छोटे से दोहे में सरलता से कह दिया गया है।

'जीवन–अमृत : पर्यावरण चेतना' और **'अक्षर–अक्षर हो अमर'** इन दोनों ग्रंथों में **'पर्यावरण चेतना', 'प्रकृति–चेतना', 'धरा–चेतना', 'वन–चेतना', 'जल–चेतना', 'ध्वनि प्रदूषण–चेतना', 'पर्यावरण–जागृति', 'पर्यावरण बचाइए', 'वृक्ष मित्र–चेतना', 'यज्ञ–हवन–चेतना', 'वन–संरक्षण', 'युग–संकल्प'** आदि शीर्षकों के रुप में पर्यावरण संरक्षण के वे समस्त संदर्भ, जो आज के समाज के लिए प्रासंगिक है, वे ज्वलंत समस्याएँ जो आधुनिक युग की दुखती रग है, जिनका समाधान भी मानव अपने प्रयासों से ही कर सकता है एवं अन्य अनेक विसंगतियों को, कसावट लिए 'दोहों' के चौखटे में, इस प्रकार रेखांकित किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही वेदना का चित्र उनमें देखने लगता है।

'पर्यावरण–चेतना' और 'पर्यावरण–रक्षा का संदेश' इन दोहों में सूक्ति की भाँति प्रस्तुत किया गया है। कवि की चेतना उन बिन्दुओं पर अपना विशेष ध्यान आकृष्ट करती दिखती है, जो आज के युग धर्म के प्रति प्रत्येक मानव–मात्र का सहज कार्य और दायित्व होना चाहिए।

डॉ0 'अरुण' जी **'पर्यावरण–चेतना', 'संकल्प–चेतना'** और **'युग संकल्प'** शीर्षकों में आए दोहों के माध्यम से सभी से आशा और विश्वास के साथ आग्रह करते हैं कि आइए हम सभी संकल्प लेकर पर्यावरण–संरक्षण की इस लड़ाई में जुट जाएँ ताकि हम बच सकें और अपने राष्ट्र को बचा सकें। यह संकल्प उनके दोहों में बहुत सुन्दर ढंग से व्यक्त किया गया है–

पर्यावरण बचाएँगे, करें सभी संकल्प।
योगदान सबका रहे, अधिक रहे या अल्प।।

विश्व–चेतना अब जगे, रहे सभी को ध्यान।
पर्यावरण बचाएँ हम, संकट में है जान।।

यही विश्व की कामना, उन्नति करे समाज।
पर्यावरण बचाएँ हम, हुआ ज़रुरी आज।।

राष्ट्र–सुरक्षा के लिए, करो प्रदूषण दूर।
पर्यावरण की चेतना, हो सबमें भरपूर।।

निश्चित रुप से डॉ0 योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' जी के दोहे पर्यावरण–संरक्षण के प्रति समाज में जागृति पैदा करने में सफल होंगे और **'प्रदूषण'** से मुक्त राष्ट्र बनाने के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सपने **'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत'** को साकार करने में भरपूर योगदान देंगे।